कार्यालय जिला कलक्टर, राजसमन्द

पंच गौरव

जिला-राजसमन्द

:प्रस्तुति:

बाल मुकुन्द असावा

जिला कलक्टर, राजसमन्द

सत्यमेव जयते

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

अनुक्रमणिका

राजसमंद जिला : एक परिचय	4
पंच गौरव एवं नोडल विभाग	7
जिला स्तरीय समिति	8
एक जिला एक गंतव्य	9
एक जिला एक प्रजाति	13
एक जिला एक उत्पाद	16
एक जिला एक खेल	19
एक जिला एक उपज	21

राजसमंद जिला : एक परिचय

राजसमंद : प्रकृति, संस्कृति, उद्यमिता का अनूठा संगम

लघु इतिहास	गोमती नदी के प्रचण्ड प्रवाह को रोकने के लिए महाराणा राजसिंह द्वारा बनाए गए बांध ''राजसमंद'' के नाम पर राज्य सरकार की अधिसूचना दिनांक 30 मार्च, 1991 के अनुसरण में राजसमन्द जिला दिनांक 10 अप्रैल, 1991 को अस्तित्व में आया।
लोकसभा एवं विधानसभा क्षेत्र	लोकसभा क्षेत्रः राजसमंद लोकसभा क्षेत्र विधानसभा क्षेत्रः भीम 173, कुंभलगढ़ 174, राजसमंद 175, नाथद्वारा 176
निकटवर्ती जिले	अरावली की पर्वतमालाओं के मध्य राजसमन्द जिले के उत्तर दिशा मे अजमेर, पश्चिम में पाली, पूर्व में भीलवाडा, चित्तौड़गढ़ एवं दक्षिण में उदयपुर जिला स्थित है।
CONNECTIVITY	राजसमंद चारों ओर शानदार राष्ट्रीय राजमार्गों के नेटवर्क से जुड़ा हुआ है। कांकरोली में रेलवे स्टेशन निर्माणाधीन है। निकटतम एयरपोर्ट उदयपुर के डबोक में स्थित है जो यहाँ से 75 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जो हाइवे से एंड टू एंड कनेक्टेड है। दिल्ली–मुम्बई राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–8 पर जिला मुख्यालय अवस्थित है। जिला मुख्यायल राज्य की राजधानी जयपुर से 350 किमी. एवं सम्भाग मुख्यालय उदयपुर से 67 किमी. दूरी पर स्थित है।
भूगोल	जिले का कुल क्षेत्रफल 4655 वर्ग कि.मी. है तथा जिले में कुल 1077 राजस्व ग्राम हैं। जिले में चार प्रमुख नदियां 'खारी, बनास' नाथद्वारा में, 'चन्द्रभागा' आमेट में एवं 'गोमती' नदी कुम्भलगढ में बहती है। 'राजसमन्द' एवं 'नंदसमंद' दो प्रमुख झीले हैं। जिले की औसत वर्षा 725 मिमी. है।
प्रशासनिक स्थिति	प्रशासनिक दृष्टि से राजसमन्द जिले में 07 उपखण्ड हैं– राजसमन्द, नाथद्वारा, भीम, कुम्भलगढ, रेलमगरा, आमेट, देवगढ हैं। जिले में 11 तहसील हैं– भीम, देवगढ़, कुम्भलगढ़, आमेट, राजसमंद, रेलमगरा, नाथद्वारा, खमनोर, गढबोर, कुँवारिया, देलवाड़ा। जिले में 8 पंचायत समितियां हैं– आमेट, भीम, देवगढ़, कुंभलगढ़, खमनोर, देलवाड़ा, रेलमगरा, राजसमंद है। कुल 206 ग्राम पंचायतें हैं।

	जिले में कुल 1711 राजकीय विद्यालय हैं, इसमें 812 PS, 455 UPS, 444 SR. SEC. हैं।
जनसंख्या	जिले की कुल जनसंख्या जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार 11,56,597 है जिसमें 5,75,258 स्त्री, 5,81,339 पुरूष एवं अन्य 14 है। जिले में महिला लिंगानुपात जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार 990 प्रति हजार पुरूष है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार कुल साक्षरता दर 63.14% रही। इसमें पुरुषों की साक्षरता दर 79.52% थी, जबकि महिलाओं की साक्षरता दर 48.44% दर्ज की गई।
तीज–त्यौहार	प्रमुख मेले एवं उत्सवों में गणगौर का मेला, महाराणा प्रताप जयंती का मेला, जलझूलनी एकादशी का मेला, करणीमाता का पशु मेला, अन्नकूट मेला, जन्माष्टमी मेला आदि अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।
पर्यटन	पर्यटन की दृष्टि से यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट–कुंभलगढ़ दुर्ग, राजसमंद झील स्थिल नौचोकी पाल एवं इरिगेशन पाल, कुंभलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य, गोरम घाट जैसे कई स्थान हैं। जिले में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप के गौरवमयी इतिहास से जुड़े स्थल जैसे हल्दीघाटी दर्रा (हल्दीघाटी युद्धस्थल), हल्दीघाटी महाराणा प्रताप स्मारक, चेतक समाधि, रक्ततलाई, दीवेर स्मारक, छापली, मचींद आदि स्थित हैं। ऐसे ही नंदसमंद बांध, बाघेरी नाका बांध, भील बेरी जल प्रपात जैसे अनेकों स्थल भी आकर्षण का केंद्र हैं। मेवाड़ के चार धामों में से तीन धामों के अवस्थित होने से यह जिला धार्मिक स्थलों की दृष्टि से भी विशेष महत्व रखता है। जिले का गिलुंड पुरातात्विक स्थल है जो यह आहड़–बनास सभ्यता में खुदाई किए गए पाँच प्राचीन स्थलों में से एक है। इसे मोडिया मगरी के नाम से भी जाना जाता है।
धर्म	वैष्णवों के प्रमुख तीर्थ श्रीनाथजी (नाथद्वारा नगर), श्री द्वारकाधीश (कांकरोली नगर), श्रीचारभुजाजी (ग्राम चारभुजा) के अतिरिक्त रामेश्वर महादेव, कुन्तेश्वर महादेव, गुप्तेश्वर महादेव, रोकडिया हनुमान, रूपनारायण मन्दिर एवं परशुराम महादेव मन्दिर धार्मिक महत्व के अन्य स्थान हैं।
खनिज	खनिज आधारित उद्योग के क्षेत्र में यह जिला विशेष तौर पर अग्रणी है। जिले में लेड, जिंक, सिल्वर, मार्बल, ग्रेनाइट, सोप स्टोन, डोलोमाइट, क्वार्ट्ज फेल्सपार, मेसनरी स्टोन के प्रचुर भंडार हैं। यहाँ का हाई क्वालिटी मार्बल और ग्रेनाइट पूरे देश–दुनिया में अपनी एक अलग पहचान रखते हैं। राज्य सरकार ने बजट घोषणा 2024–25 में नई स्टोन मंडी के निर्माण की घोषणा की है। ऐसे ही मोलेला की मृण–शिल्प कला आज विश्वविख्यात हो चुकी

	है। पिपलांत्री का पर्यावरण संरक्षण देखने भी दुनियाभर से सैलानी यहाँ आते है।
कला	मोलेला की टेराकोटा कला ने भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जिले को पहचान दिलायी है। यह जिला मीनाकारी, सिल्वर ज्वैलरी, पेंटिंग एवं छपाई, मुकुट श्रृंगार तथा रेडीमेट गारमेन्ट के रूप में रूई जैकेट, लहंगा, चौली आदि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान रखता है।
उद्योग	रीको ने जिले में तीन औद्योगिक क्षेत्र राजनगर, धोइंदा और बग्गड़ पूर्ण विकसित किए हैं। कुरज और मुरडा में नए औद्योगिक क्षेत्रों का विकास कार्य प्रगति पर है। इंडस्ट्रियल मेप पर जिले में 5 वृहत और 4 मध्यम इंडस्ट्री हैं, इसके साथ ही लगभग 15 हजार एमएसएमई उद्योग स्थापित है। जिले में मिनरल प्रोसेसिंग, इंजीनियरिंग, टायर, मेटल, पर्यटन, फ्रेब्रिकेशन, मॉड्यूलर फर्नीचर, फर्टिलाइजर सहित विभिन्न क्षेत्रों में अनेकों इंडस्ट्रीज सफल रूप से संचालित है।

फ़ोटो : नौ चौकी पाल, राजसमंद झील,

पंच गौरव एवं नोडल विभाग

गौरव	चयनित गौरव	नोडल विभाग
एक जिला-एक उपज	सीताफल	कृषि एवं उद्यानिकी विभाग
एक जिला-एक वनस्पति प्रजाति	नीम	वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग
एक जिला-एक पर्यटन स्थल	कुंभलगढ़	पर्यटन विभाग
एक जिला-एक खेल	हॉकी	खेल एवं युवा मामलात् विभाग
एक जिला-एक उत्पाद	मार्बल-ग्रेनाइट के उत्पाद	उद्योग एवं वाणिज्य विभाग

नीम

सीताफल

कुंभलगढ़

हॉकी

मार्बल-ग्रेनाइट

जिला स्तरीय समिति

राज्य सरकार के नवाचार 'पंच गौरव' अंतर्गत राज्य स्तरीय समिति का गठन किया जा चुका है:

क्रमांक	अधिकारी	पद
1.	जिला कलक्टर	अध्यक्ष
2.	उप वन संरक्षक	सदस्य
3.	जिला कोषाधिकारी, राजसमंद	सदस्य
4.	महाप्रबंधक, जिला उद्योग केंद्र, राजसमंद	सदस्य
5.	संयुक्त निदेशक, कृषि विभाग, राजसमंद	सदस्य
6.	उप निदेशक, उद्यानिकी विभाग, राजसमंद	सदस्य
7.	जिला खेल अधिकारी, राजसमंद	सदस्य
8.	उप निदेशक, पर्यटन विभाग, उदयपुर	सदस्य
9.	संयुक्त निदेशक, सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग, राजसमंद	सदस्य
10.	जिला सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी, राजसमंद	सदस्य
11.	उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, राजसमंद	सदस्य सचिव

जिला स्तरीय समिति के कार्य/दायित्व:

1. जिला स्तर पर चिह्नित पंच गौरव के संबंध में विवरणिका तैयार करना।
2. पंच गौरव प्रोत्साहन के लिए विभागीय समन्वय से जिला स्तरीय कार्य योजना एवं जिले में उपलब्ध बजट राशि में से विभिन्न कार्यो पर व्यय के प्रस्तावों का अनुमोदन।
3. कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु जिले की कार्यप्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा ।
4. पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार की कार्ययोजना तैयार करना।
5. पंच गौरव-जिला पुस्तिका तैयार करना।

आदि...

समिति की बैठक प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक बार आयोजित की जाएगी।

एक जिला एक गंतव्य : कुंभलगढ़

कुंभलगढ़ अपनी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और वास्तुकला की धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। यह किला समुद्र तल से लगभग 1,100 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और अरावली पर्वत श्रृंखला के एक पहाड़ी शिखर पर स्थित है। कुंभलगढ़ किला एक प्रमुख पर्यटन स्थल और यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्राप्त है।

इतिहास:

कुंभलगढ़ किला 15वीं सदी में राणा कुंभा द्वारा बनवाया गया था। राणा कुंभा, मेवाड़ के शासक थे और उन्होंने इस किले का निर्माण अपनी सामरिक ताकत को दर्शाने और मेवाड़ राज्य की सुरक्षा के लिए किया। किला एक शक्तिशाली दुर्ग था, जिसे दुश्मनों से रक्षा करने के लिए रणनीतिक स्थान पर बनाया गया था।

कुंभलगढ़ किले के निर्माण में लगभग 15 वर्षों का समय लगा और यह किला एक महत्वपूर्ण सैन्य केन्द्र के रूप में कार्य करता था। इसके भीतर कई महल, मंदिर और किलों का निर्माण किया गया था। किले की दीवारें, जो लगभग 36 किलोमीटर लंबी हैं, इसे दुनिया के दूसरे सबसे बड़े किलों में से एक बनाती हैं। इस किले की दीवारें चीन की दीवार के समान लंबी हैं और इसे "दक्षिण का ग्रेट वॉल" भी कहा जाता है।

कुंभलगढ़ किले की संरचना:

कुंभलगढ़ किला विशाल और मजबूत संरचना के लिए प्रसिद्ध है। किले के भीतर एक मजबूत सुरक्षा दीवार और कई प्रवेश द्वार हैं, जो किले को बाहरी हमलों से बचाते थे। किले के अंदर कई प्रमुख स्थल हैं:

- कुंभा महल: यह किले का प्रमुख महल है, जो राणा कुंभा का निवास स्थान था।
- जैन मंदिर: किले में एक प्राचीन जैन मंदिर भी स्थित है, जो वास्तुकला और धार्मिक महत्व दोनों के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।
- भीम चोटी: किले के अंदर एक और प्रसिद्ध स्थल है भीम चोटी, जो एक आकर्षक पर्यटन स्थल है।
- तोरण पोल: यह किले का प्रवेश द्वार है और इसकी वास्तुकला बहुत ही आकर्षक है।

किले के भीतर एक बड़ा जलाशय भी है, जो गर्मी के मौसम में पानी की आवश्यकता को पूरा करता था।

कुंभलगढ़ का पर्यटन महत्व:

कुंभलगढ़ किला राजस्थान का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है, जो न केवल अपनी वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसकी सांस्कृतिक धरोहर भी अनमोल है। यह किला मेवाड़ के समृद्ध इतिहास और संस्कृति को दर्शाता है और राजस्थान के सबसे सुंदर और प्रतिष्ठित किलों में से एक है।

यहाँ पर्याप्त संख्या में स्थित रिज़ॉर्ट में पर्यटकों के ठहरने के लिए उत्कृष्ट व्यवस्थाएं हैं।

कुंभलगढ़ किले का बढ़ता हुआ पर्यटन दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है। खासकर इतिहास, संस्कृति और प्रकृति के प्रेमी इस किले की यात्रा करने के लिए दूर-दूर से आते हैं। भारतीय पर्यटकों के अलावा, विदेशी पर्यटक भी इस किले के ऐतिहासिक और वास्तुशिल्पीय महत्व को समझने और उसका अनुभव करने के लिए आते हैं।

इसके अलावा, कुंभलगढ़ का क्षेत्र प्राकृतिक सुंदरता से भी भरपूर है, जो इको-टूरिज़्म के लिए एक आदर्श स्थल बन चुका है। यहां की पहाड़ियाँ, हरियाली और वन्यजीव संरक्षण क्षेत्र पर्यटकों के लिए एक शांतिपूर्ण और सुकूनदायक अनुभव प्रदान करते हैं। इस बढ़ते हुए पर्यटन ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी समृद्ध किया है और क्षेत्र में नई व्यवसायिक अवसरों का निर्माण किया है। कुंभलगढ़ किला अब न केवल राजस्थान, बल्कि पूरे भारत और विश्वभर में एक प्रतिष्ठित पर्यटन स्थल बन चुका है।

प्रस्ताव

क्र.स.	कार्य का विवरण
1.	शिल्पग्राम का निर्माणः Artigens Shops, Local Food Stalls/Corners, Folk Artists Performance Area, Cafeteria, Parking Etc.
2.	हमेरपाल तालाब पर Rural Huts का निर्माण
कुल	**100.00 लाख**

विवरण:

शिल्पग्राम:

कुंभलगढ़ में शिल्प ग्राम का निर्माण किया जाना प्रस्तावित है जो पर्यटन के विकास को और बढ़ावा देगा। इस शिल्प ग्राम में विभिन्न प्रकार की शिल्पकला और पारंपरिक हस्तशिल्प का प्रदर्शन किया जाएगा, जिससे पर्यटकों को राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ने का अवसर मिलेगा। शिल्प ग्राम में आर्टिजन्स शॉप्स का निर्माण किया जाएगा, जहां स्थानीय कारीगर और शिल्पकार अपनी कला और वस्त्रों, मूर्तियों, और अन्य हस्तशिल्प उत्पादों का प्रदर्शन और विक्रय करेंगे। यह स्थानीय शिल्पकारों को एक मंच प्रदान करेगा और उनके काम को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने में मदद करेगा।

इसके अलावा, शिल्प ग्राम में लोकल फूड स्टॉल्स और कोर्नर्स भी होंगे, जहां पर्यटक राजस्थान के पारंपरिक और स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद ले सकेंगे। ये स्टॉल्स पर्यटकों को राजस्थान की विभिन्न तरह की स्ट्रीट फूड्स चखने का अवसर देंगे। लोक कलाकारों के प्रदर्शन क्षेत्र (Folk Artists

Performance Area) में प्रसिद्ध स्थानीय लोक संगीत और नृत्य प्रस्तुत किए जाएंगे, जिससे पर्यटकों को राज्य की सांस्कृतिक विविधता का अनुभव होगा।

शिल्प ग्राम में एक कैफेटेरिया और पार्किंग की व्यवस्था भी की जाएगी, ताकि पर्यटकों को आराम से भोजन करने और अपने वाहनों को सुरक्षित रूप से पार्क करने की सुविधा मिल सके। इससे शिल्प ग्राम एक सुविधाजनक और आकर्षक स्थल बन जाएगा, जहां लोग न केवल खरीदारी और भोजन का आनंद लेंगे, बल्कि राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का अनुभव भी करेंगे।

Rural Huts:

हमेरपाल तालाब कुंभलगढ़ के प्रसिद्ध और ऐतिहासिक जलाशयों में से एक है। यह तालाब कुंभलगढ़ किले के आसपास स्थित है और किले के भीतर जल संग्रहण की व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। तालाब का नाम "हमेरपाल" राणा हमीर सिंह से जुड़ा हुआ है, जो मेवाड़ के एक प्रसिद्ध राजा थे। यह तालाब उस समय के जल प्रबंधन और किले की सामरिक आवश्यकता के हिसाब से तैयार किया गया था।

हमेरपाल तालाब का निर्माण इस उद्देश्य से किया गया था कि किले में निवास करने वाले सैनिकों और आम जनता को पानी की किसी भी प्रकार की कमी न हो। यह तालाब किले की दीवारों के भीतर स्थित होने के कारण युद्ध के समय भी जल की आपूर्ति को सुनिश्चित करता था। तालाब का आकार बड़ा और गहरा है, जिससे वर्षा के पानी को संग्रहित किया जा सकता था और लंबे समय तक जल आपूर्ति जारी रहती थी।

आजकल, हमेरपाल तालाब एक प्रमुख पर्यटन स्थल बन चुका है, जहां पर्यटक शांति और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने के लिए आते हैं। तालाब के चारों ओर हरियाली और पहाड़ी क्षेत्र पर्यटकों को एक शांतिपूर्ण वातावरण प्रदान करते हैं। यह तालाब कुंभलगढ़ किले की भव्यता और स्थापत्य कला का एक अहम हिस्सा है, और इसके द्वारा उस समय के जल संरक्षण के तकनीकी कौशल को भी देखा जा सकता है।

कुंभलगढ़ किले में स्थित यह तालाब न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह पर्यटकों को प्राचीन जल प्रबंधन प्रणाली और किले के ऐतिहासिक महत्व को समझने का एक अद्भुत अनुभव भी देता है।

यहाँ अलग-अलग रुरल हट का निर्माण कर पर्यटकों को और आकर्षित किया जाकर बेहतर अनुभव दिया जा सकता है।

एक जिला एक प्रजाति : नीम

नीम (Azadirachta indica) एक बहुपरकारी वृक्ष है, जो भारतीय उपमहाद्वीप में विशेष रूप से पाया जाता है। इसे "भारत का प्राकृतिक औषधि खजाना" कहा जाता है, क्योंकि इसका हर हिस्सा—पत्तियाँ, छाल, फूल, फल, और बीज—स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। नीम का पेड़ अपने औषधीय गुणों के लिए प्राचीन काल से ही जाना जाता है और आयुर्वेदिक चिकित्सा में इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

नीम राजसमंद जिले के वन क्षेत्र (सूखा पर्णपाती वन) में पाया जाने वाला एक लोकप्रिय वृक्ष प्रजाति है। इसके विभिन्न उपयोगों के कारण, इसे एक कृषि-वनस्पति प्रजाति के रूप में प्राथमिकता दी जाती है। इसके विविध उपयोगों में प्राकृतिक कीट नियंत्रण एजेंट के रूप में उपयोग, उर्वरक (नीम की खली), चारा (नीम की पत्तियां), औषधीय गुण (नीम तेल, नीम पत्तियों का अर्क) और मिट्टी सुधार शामिल हैं। इसमें ग्रामीण समुदायों की आजीविका सुरक्षा बढ़ाने की अपार संभावना है, जैसे बीज संग्रहण, प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन। यह गरीब और पत्थरीली मिट्टी के लिए एक उपयुक्त प्रजाति है और जल अभाव वाले क्षेत्रों में जल संरक्षित करने में मदद करती है, जैसा कि राजसमंद जिले में देखा जाता है। यह आश्चर्यजनक रूप से जल स्तर को बढ़ाता है और मवेशियों को आश्रय भी प्रदान करता है।

राजसमंद जिले का पिपलांत्री गांव एक परंपरा का पालन करता है, जिसमें हर बार जब कोई लड़की पैदा होती है, तो एक नीम का पेड़ लगाया जाता है। यह परंपरा कई वर्षों से इस गांव में चल रही है।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, 'पंच गौरव कार्यक्रम' के तहत राजसमंद जिले के लिए नीम को चयनित किया गया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न गतिविधियाँ निर्धारित की गई हैं, जिनमें एक कृषि-वनस्पति मॉडल विकसित किया जाएगा, ताकि नीम आधारित कुटीर उद्योगों के साथ एक अग्रिम कड़ी स्थापित की जा सके, जो राजसमंद के ग्रामीण क्षेत्रों में विकसित की जाएं। नीम के वृक्षों को बढ़ाने और उनका प्रचार-प्रसार करने, इसके गैर-लकड़ी उत्पादों (पत्तियां, फल, टहनियां) की कटाई, और इन उत्पादों को प्रसंस्करण कर मूल्य संवर्धित उत्पादों जैसे नीम पत्तियों का पाउडर, नीम तेल, नीम तेल की खली आदि बनाने पर ध्यान दिया जाएगा।

यह वृक्षारोपण पंचायत भूमि, गोचर भूमि पर संबंधित विभाग के समन्वय से किया जाएगा। ग्रामीणों को मूल्य संवर्धित प्रसंस्करण गतिविधियों में कौशल विकास प्रदान किया जाएगा, ताकि राजसमंद जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में सफल SHG (स्वयं सहायता समूह) आधारित कुटीर उद्योगों का विकास हो सके। इससे आजीविका सृजन, महिला सशक्तिकरण, स्वास्थ्य संबंधी सकारात्मक परिणाम और पारिस्थितिकी का पुनर्स्थापन होगा।

नीम के औषधीय लाभ:

1. त्वचा की देखभाल: नीम के पत्तों में एंटीसेप्टिक और एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं, जो त्वचा की समस्याओं जैसे पिंपल्स, एक्जिमा, सोरायसिस, और फंगल इंफेक्शन का इलाज करने में मदद करते हैं। नीम का तेल भी त्वचा को नमी प्रदान करने और रूखी त्वचा को राहत देने के लिए उपयोगी होता है।
2. मधुमेह के उपचार में: नीम के पत्तों का सेवन रक्त शर्करा (ब्लड शुगर) के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करता है, और यह मधुमेह (डायबिटीज) के रोगियों के लिए एक प्राकृतिक उपचार के रूप में काम करता है।
3. प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाना: नीम में एंटीऑक्सिडेंट्स होते हैं, जो शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को सशक्त बनाते हैं और शरीर को संक्रमणों और बीमारियों से बचाने में मदद करते हैं।
4. पाचन संबंधी समस्याओं का इलाज: नीम के पत्तों और छाल का उपयोग पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने के लिए किया जाता है। यह आंतों के संक्रमण, पेट की गैस और कब्ज जैसी समस्याओं में राहत देता है।
5. मच्छरों और कीटों से बचाव: नीम का तेल और नीम की पत्तियाँ मच्छरों और अन्य कीटों से बचाव के लिए भी प्रसिद्ध हैं। नीम का तेल मच्छरों को दूर रखने के लिए एक प्राकृतिक रिपेलेंट के रूप में उपयोग किया जाता है।

नीम का महत्व:

नीम का वृक्ष न केवल औषधीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह पर्यावरण के लिए भी लाभकारी है। नीम के पेड़ हवा को शुद्ध करने, पानी की गुणवत्ता को बनाए रखने, और मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाने में सहायक होते हैं। इसकी पत्तियाँ और बीज कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करती हैं, जिससे यह पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में मदद करता है।

नीम एक बहुपरकारी पेड़ है, जिसकी पत्तियाँ, छाल, बीज, और तेल स्वास्थ्य और सौंदर्य में अनेक लाभ प्रदान करते हैं। इसके औषधीय गुणों के कारण नीम का उपयोग सदियों से किया जाता रहा है और यह आज भी प्राकृतिक उपचारों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसके अलावा, नीम का पेड़ पर्यावरण के लिए भी एक अमूल्य संसाधन है।

Sr. No.	Description of Work
1.	**Collection Of Seeds, Raising Of 3 Lakh Plants In Nursery, Raising Plantation On Forest Land, Distribution To Public, Creation Of Seed Orchards**
2.	**Collection Of Need Based Produce (Leaves, Fruits, Twigs) And Transportation To Collection Centers**
3.	**Development Of Collection Centers**
4.	**Development Of Shg Based Cottage Industries (Through Vfpmc) For Processing Of Neem Based Produce And Production Of Products Like Neem Leaf Powder, Neem Oil, Neem Oil Cake Etc., Skill Development, Training Etc.**
5.	**Development Of Brand For The Products Developed, Marketing Of Products, Advertising Of The Products, Creating Supply Chain Linkage With Pharmaceutical Firms For The Supply Of Raw Materials To Them For Its Further Processing To Develop Higher Value-Added Products**
TOTAL ESTIMATE	100.00 LAKH

एक जिला एक उत्पाद : मार्बल-ग्रेनाइट के उत्पाद

Photo: Stone Industry of Rajsamand

मार्बल और ग्रेनाइट

मार्बल (Marble) और ग्रेनाइट (Granite) दोनों ही प्राकृतिक पत्थर हैं, जो पृथ्वी की सतह के अंदर से खनिजों के जमा होने के कारण बनते हैं। ये दोनों पत्थर अपनी सुंदरता, मजबूती, और विभिन्न उपयोगों के लिए प्रसिद्ध हैं।

1. मार्बल (Marble):

मार्बल एक प्रकार का कठोर, पारदर्शी और चमकदार पत्थर है, जो मुख्य रूप से कैल्सियम कार्बोनेट (CaCO3) से बना होता है। यह पत्थर आमतौर पर सफेद, क्रीम, गुलाबी और हरे रंग में पाया जाता है, लेकिन इसमें विभिन्न रंगों के पैटर्न भी होते हैं। मार्बल को मुख्य रूप से शिल्पकारी, भवन निर्माण, और सजावट के उद्देश्य से उपयोग किया जाता है।

2. ग्रेनाइट (Granite):

ग्रेनाइट एक अधिक कठोर और घनत्व वाला प्राकृतिक पत्थर होता है, जो मुख्य रूप से क्वार्ट्ज, फेल्डस्पार, और मिका जैसे खनिजों से बना होता है। यह पत्थर विभिन्न रंगों में उपलब्ध होता है, जैसे काला, ग्रे, गुलाबी और सफेद। ग्रेनाइट का उपयोग मुख्य रूप से निर्माण कार्य में, जैसे कि किचन के काउंटरटॉप्स, इमारतों की दीवारें, और सड़क निर्माण में होता है।

मार्बल और ग्रेनाइट से बनने वाले उत्पाद

सजावटी उत्पाद:

- फर्श टाइल्स (Floor Tiles): मार्बल और ग्रेनाइट की टाइल्स घरों और ऑफिसों के फर्श को सजाने के लिए बेहद लोकप्रिय हैं।
- वॉल क्लैडिंग (Wall Cladding): इन पत्थरों का उपयोग दीवारों को सजाने के लिए भी किया जाता है, जिससे वे आकर्षक और टिकाऊ बनते हैं।

स्मारक और शिल्पकला:

- प्रतिमाएं और मूर्तियां: मार्बल का उपयोग शिल्पकला में बहुत होता है, जैसे मूर्तियों और सजावटी वस्तुओं के निर्माण में।

किचन और बाथरूम के उत्पाद:

- काउंटरटॉप्स और सिंक: ग्रेनाइट किचन और बाथरूम में काउंटरटॉप्स और सिंक बनाने के लिए आदर्श सामग्री है, क्योंकि यह मजबूत, टिकाऊ और आसानी से साफ किया जा सकता है।

स्टैच्यूज़ और आर्टिफैक्ट्स:

- मार्बल का उपयोग मूर्तियों और अन्य शिल्पकला के उत्पादों के निर्माण में किया जाता है। इनका उपयोग प्रमुख मंदिरों, महलों और शिल्प संग्रहालयों में किया जाता है।

राजसमंद जिले में मार्बल और ग्रेनाइट की अहमियत

राजसमंद जिला, राजस्थान के प्रमुख मार्बल और ग्रेनाइट उत्पादक क्षेत्रों में से एक है। इस जिले की भूमि पर विशाल मार्बल और ग्रेनाइट के खदान स्थित हैं, जो भारत ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी निर्यात किए जाते हैं। राजसमंद जिले में इन दोनों प्राकृतिक पत्थरों का खनन, कटाई, और प्रसंस्करण बड़े पैमाने पर होता है, जिससे यह क्षेत्र एक प्रमुख उद्योग केंद्र बन चुका है।

आर्थिक योगदान:

- राजसमंद जिले के लोग मार्बल और ग्रेनाइट के व्यापार से जुड़ी हुई विभिन्न गतिविधियों में लगे हुए हैं। खनन, कटाई, शिल्पकला और प्रसंस्करण से जुड़ी नौकरियां इस क्षेत्र में लाखों लोगों के लिए आय का प्रमुख स्रोत हैं।

निर्यात और व्यापार:

- राजसमंद का मार्बल और ग्रेनाइट विश्वभर में निर्यात होता है, विशेष रूप से यूरोप, अमेरिका, और मध्य पूर्व देशों में। इन उत्पादों की अंतरराष्ट्रीय बाजार में उच्च मांग है, जो जिले की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करती है।

पर्यटन और सांस्कृतिक महत्व:

- राजसमंद जिले में मार्बल से बने कई ऐतिहासिक स्मारक और मंदिर हैं, जैसे सालंगपुर मंदिर और नाथद्वारा मंदिर, जो पर्यटन के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। इन स्थानों की शिल्पकला और मार्बल निर्माण तकनीक दर्शकों को आकर्षित करती है।

स्थानीय विकास:

- मार्बल और ग्रेनाइट उद्योग के कारण स्थानीय बुनियादी ढांचे में भी विकास हुआ है। सड़कें, परिवहन, और अन्य सेवाएं इस क्षेत्र में बेहतर हुई हैं। इसके अलावा, इस उद्योग में निवेश से शैक्षिक और स्वास्थ्य सेवाओं में भी सुधार आया है।

प्रस्ताव

क्र.स.	कार्य का विवरण
1.	कलाकृतियों की बिक्री को एकीकृत मंच प्रदान करने हेतु ग्रामीण हाट का निर्माण।
2.	ग्रामीण हाट में: डिस्प्ले युनिट, एग्जीबिषन, लेब, कॉन्फ्रेंस रूम, उत्पादों का म्यूजियम, केफेटेरिया, पार्किंग एरिया आदि संबंधी कार्य।
कुल	50.00 लाख

एक जिला-एक खेल : हॉकी

फ़ोटो : एस्टरोटर्फ़ पर आयोजित हॉकी प्रतियोगिता

राजसमंद जिले में हॉकी का विशेष महत्व है और यह खेल यहां के युवाओं के बीच काफी लोकप्रिय है। राजस्थान राज्य में हॉकी के प्रति एक गहरी रुचि और जोश देखने को मिलता है और राजसमंद जिला इस खेल के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है।

अगर इन खिलाड़ियों को समुचित सुविधाएं और संसाधन मिले तो ये राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर नाम रोशन कर सकते हैं। जिले में ग्राम भाना में राज्य का चौथा हॉकी एस्टरोटर्फ़ बन कर संचालित है जहां नियमित रूप से खिलाड़ी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। जिले से कई राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी निकले हैं और यहाँ हॉकी के लिए उत्साह लंबे समय से रहा है।

स्थानीय स्तर पर समय-समय पर जिले में नियमित रूप से हॉकी टूर्नामेंट्स और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता रहा है, जो खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करते हैं। इन टूर्नामेंट्स में युवा और अनुभवहीन खिलाड़ी भाग लेते हैं, जो उन्हें अपनी तकनीक और खेल क्षमता को सुधारने में मदद करते हैं। जिला स्तर पर आयोजित ये प्रतियोगिताएं न केवल स्थानीय खिलाड़ियों के लिए महत्वपूर्ण होती हैं, बल्कि यहां से राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर जाने के अवसर भी मिलते हैं।

राजसमंद जिले के कुछ खिलाड़ियों ने हॉकी के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है और राज्य तथा राष्ट्रीय टीमों में अपनी जगह बनाई है। यह जिले के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जो हॉकी में अपना करियर बनाने का सपना रखते हैं। इन खिलाड़ियों की मेहनत और संघर्ष ने साबित किया है कि राजसमंद में हॉकी की संभावनाएं और प्रतिभा भरपूर हैं।

हॉकी राजसमंद के समुदाय में एकजुटता और सहयोग की भावना को बढ़ावा देता है। यह खेल यहां के लोगों को एक साथ लाता है और स्थानीय संस्कृति और भाईचारे को मजबूत करता है। हॉकी के मैचों और टूर्नामेंट्स में स्थानीय लोग अपनी टीमों का उत्साहवर्धन करते हैं, जिससे खेल के प्रति एक सामाजिक उत्साह पैदा होता है। यह टीम भावना और सामूहिक प्रयास का प्रतीक है, जो समाज के अन्य क्षेत्रों में भी प्रभाव डालता है।

राजसमंद जिले में हॉकी का महत्व लगातार बढ़ रहा है। यहां की युवा पीढ़ी इस खेल को न केवल शौकिया तौर पर खेलती है, बल्कि इसे अपने करियर के रूप में भी देखती है। हॉकी के प्रति यह जोश और उत्साह जिले में नए खिलाड़ियों के लिए नए अवसर पैदा कर रहा है। प्रशिक्षण सुविधाओं, टूर्नामेंट्स और उत्कृष्ट खिलाड़ियों की सफलता ने राजसमंद को हॉकी के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण केंद्र बना दिया है। हॉकी न केवल खेल के रूप में जिले के विकास में योगदान दे रहा है, बल्कि यह समाज में एकता, साहस और दृढ़ संकल्प का प्रतीक भी बन चुका है।

प्रस्ताव

क्र.स.	कार्य का विवरण
1.	ग्राम, उपखण्ड तथा जिला स्तर पर खेल प्रतियोगिता आयोजित करना
2.	खेल प्रतियोगिता में चयनित हॉकी खिलाड़ियों का वर्ष में 2 बार 21 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित करना।
3.	ब्लॉक स्तर पर खेल मैदान का निर्माण एवं रख रखाव।
4.	खिलाड़ियों को ठहराने के लिए 30 बेड हॉस्टल का निर्माण
5.	जिला स्तर पर चयनित खिलाड़ियों को प्रशिक्षण हेतु अंतरराष्ट्रीय कोच व खिलाड़ियों को उपलब्ध कराना।
6.	पुरुष व महिला चेंजिंग रुम एवं बाथरूम।
7.	प्रतियोगिता में चयनित उत्कृष्ट खिलाड़ियों को खेल उपकरण प्रशिक्षण हेतु प्रदान करना।
कुल	100.00 लाख

एक जिला एक उपज: सीताफल

सीताफल: एक स्वादिष्ट फल और इसके फायदे

सीताफल (Annona squamosa), जिसे शरीफा भी कहा जाता है, एक स्वादिष्ट और पौष्टिक फल है जो विशेष रूप से उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है। यह फल अपने मीठे स्वाद, नरम गूदे और पोषक तत्वों के लिए प्रसिद्ध है।

सीताफल का आकार अंडे जैसा होता है, और इसकी बाहरी त्वचा हरे रंग की होती है, जो अक्सर शल्कयुक्त या खुरदरी होती है। इसका अंदरूनी गूदा सफेद, रेशेदार और मीठा होता है, जिसमें काले बीज होते हैं।

सीताफल का स्वाद बहुत ही सुखद और मीठा होता है, और यह गर्मी के मौसम में एक ताजगी देने वाला फल होता है। इसके गूदे का उपयोग सीधे खाने, जूस बनाने, शेक बनाने, मिठाइयों, और आइसक्रीम बनाने में भी किया जाता है।

सीताफल के लाभ:

सीताफल केवल स्वाद में ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य के लिहाज से भी बेहद फायदेमंद होता है। इसके प्रमुख लाभों में शामिल हैं:

1. पोषक तत्वों से भरपूर: सीताफल में विटामिन C, विटामिन B6, आयरन, कैल्शियम और पोटेशियम जैसे महत्वपूर्ण पोषक तत्व होते हैं, जो शरीर के लिए लाभकारी होते हैं।
2. हृदय स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद: सीताफल में मौजूद पोटेशियम हृदय की सेहत को बनाए रखने में मदद करता है, क्योंकि यह रक्तचाप को नियंत्रित करने में सहायक होता है।
3. पाचन को बेहतर बनाना: इसमें फाइबर की अच्छी मात्रा होती है, जो पाचन तंत्र को स्वस्थ बनाए रखने में मदद करती है और कब्ज की समस्या को दूर करती है।
4. एंटीऑक्सिडेंट गुण: सीताफल में मौजूद एंटीऑक्सिडेंट्स शरीर को फ्री रेडिकल्स से बचाते हैं, जो वृद्धावस्था और विभिन्न बीमारियों का कारण बन सकते हैं।
5. त्वचा के लिए फायदेमंद: सीताफल का गूदा त्वचा के लिए भी फायदेमंद होता है, क्योंकि यह त्वचा को नमी और कोमलता प्रदान करता है।

राजसमंद में सीताफल का महत्व:

राजसमंद जिला राजस्थान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जो न केवल अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि कृषि उत्पादन में भी विशेष पहचान रखता है। इस जिले में विभिन्न प्रकार के फल और सब्जियां उगाई जाती हैं, और सीताफल इस क्षेत्र के प्रमुख कृषि उत्पादों में से एक है।

कृषि और आर्थिक योगदान

राजसमंद जिले में सीताफल का उत्पादन बढ़ रहा है, और यह किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण आय का स्रोत बन चुका है। यहाँ के किसान इसे अपने खेतों में उगाते हैं, क्योंकि यह फल जलवायु की विविधता और मिट्टी के प्रकारों के लिए उपयुक्त है। सीताफल की खेती से किसानों को न केवल एक अच्छा बाजार मूल्य मिलता है, बल्कि यह एक अत्यधिक लाभकारी फसल के रूप में उभरा है।

सीताफल की खेती किसानों को एक नया और स्थिर आय स्रोत प्रदान करती है, जिससे जिले की कृषि अर्थव्यवस्था में योगदान होता है। इसके साथ ही, सीताफल का उत्पादन जिले में छोटे और मझले किसान समूहों के लिए एक सशक्त व्यवसायिक अवसर बन गया है। इसके व्यावसायिक उपयोग जैसे जूस, आइसक्रीम और अन्य प्रसंस्कृत उत्पादों के रूप में भी बिक्री की जा सकती है।

स्वास्थ्य और पर्यटन का संबंध

राजसमंद जिले में सीताफल के उत्पादन से न केवल स्थानीय लोगों की सेहत बेहतर होती है, बल्कि यह क्षेत्रीय पर्यटन को भी बढ़ावा देता है। पर्यटक इस क्षेत्र की कृषि और स्थानीय उत्पादों को देखने आते हैं, जिससे एक नई प्रकार की टूरिज़्म गतिविधियाँ उत्पन्न होती हैं। जिले में सीताफल के बागानों में पर्यटकों को फलों की ताजगी का अनुभव करने और खेतों में काम करने का मौका मिलता है।

सांस्कृतिक महत्व और स्थानीय बाजार

राजसमंद में सीताफल का सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व भी है। स्थानीय बाजारों में सीताफल की डिमांड है, और यह फल विभिन्न त्यौहारों और समारोहों में विशेष रूप से इस्तेमाल किया जाता है। लोग इसे मिठाइयों में डालते हैं और विशेष अवसरों पर इसका उपयोग करते हैं। इसके स्वाद और स्वास्थ्य लाभ के कारण यह क्षेत्रीय लोगों में बहुत लोकप्रिय है।

निष्कर्ष

राजसमंद जिले में सीताफल का उत्पादन न केवल कृषि विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है, बल्कि यह स्थानीय अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य, और सांस्कृतिक गतिविधियों में भी महत्वपूर्ण भूमिका

निभा रहा है। यह फल न केवल स्वादिष्ट और पोषक तत्वों से भरपूर है, बल्कि किसानों के लिए आर्थिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत लाभकारी है। इसके उत्पादन और प्रसंस्करण के जरिए जिले को न केवल घरेलू बल्कि वैश्विक स्तर पर भी पहचान मिल रही है।

प्रस्ताव

क्र.स.	कार्य का विवरण
1.	सीताफल प्रोसेसिंग युनिट
2.	सीताफल के उन्नत किस्म के पौधों का वितरण, सीताफल क्लस्टर निर्माण
3.	सीताफल के संग्रहण, भण्डारण, छंटाई, ग्रेडिंग, पैकेजिंग ईकाई का निर्माण
4.	सीताफल से निर्मित उत्पादों/खाद्य पदार्थों को मार्केट लिंकेज प्रदान करने हेतु डेडिकेटेड शॉप्स का निर्माण
कुल	50.00 लाख